उ ज

ल त

प्रस्तुत कविताएं हिंदी भाषा में लिखी गईं हैं जो पाठक को कोविड के दौरान समाजिक परिपेक्ष की याद दिलाती है अथवा प्रेम के वियोग का आनंद देती हैं।

अनोनिमाइक

1. Tumse

सुबह तुमसे।

रात तुमसे।

शुरू खतम।

बात तुमसे।

इश्क तुमसे।

बैर तुमसे।

ना जुदा होंगे।

खैर तुमसे।

ज़खम तुमसे।

मरहम तुमसे।

मोहब्बत है।

सनम तुमसे।

बीत ते रहेंगे।

लम्हे मेरे जैसे।

पर तू वक्त सा।

साथ रहेगा।

खोजते रहेंगे।

खोजाने तक तुझे।

दीवाना तुझको।

भी याद रहेगा।

ना कोई गिला।

ना शिकन तुमसे।

ना कोई जलन।

ना चुभन तुमसे।

यूं ही प्यार।

करूंगा सदा।

तुम्हारी कसम।

है वचन तुमसे।

2.Gaata Rahoonga

तेरी आंखों की बातों में।

कुछ तो गलत है।

अनसुना कर मैं इनसे।

खुदको छुपाता रहूंगा।

तेरे होठों के वादों में।

कुछ गफलत है।

तोड़ के जाएगी तू।

में बुलाता रहूंगा।

अगर तेरी ज़िद है।

कि सुनना नहीं है।

तो मेरी भी ज़िद है।

मैं गाता रहूंगा।

कसम जो खाई तूने।

की करना खतम है।

तेरी कसम वापिस।

मैं आता रहूंगा।

नहीं कोई भरम।

प्यार से जो बड़ा हो।

इस भरम में।

जिंदगी लुटाता रहूंगा।

अपने जीवन की।

यादों और बातों में।

तुझको सजा कर ।

खुद को मिटाता रहूंगा।

3. Siva tere

ना कुछ याद आता है।

ना कुछ सोच सकता हूं।

सिवा तेरे।

सब तेरे बाद आता है।

ना सोता हूं ना जगता हूं।

बिना तेरे।

बदरी की सुबह में बौछारों सी खिलखिलाती तू।

मेरे सूने मन में सितारे सी अकेली जगमगाती तू।

कभी तो रूबरू आके अगर बस मुस्कुराती तू।

कर जाती रौशन ये अंधेरे।

देखता तुझको हर सवेरे।

जिगर मेरे।

बिना तेरे।

काश कुछ अश्क बह जाते।

ना बिन आंसू के रह जाते।

संग तेरे।

समां रंगीन कर देते।

सब कुछ हसीन कर देते।

रंग तेरे।

चंदन की खुशबू सी या जादू सी है तेरी बातें।

तेरे आने की खुशी जाने के गम में होती बरसातें।

बिना एक पल भी लेके नींद यूं कटती रहीं रातें।

कर जाती रौशन ये अंधेरे।

देखता तुझको हर सवेरे।

जिगर मेरे।

बिना तेरे।

4. Mumkin Se Namumkin

मुमकिन से नामुमकिन तक का।

सफर यूं ही कट जाता है।

हम दोनों का जीवन।

मुझमें और तुझमें बट जाता है।

अंधेरे का बादल कभी न कभी।

ज़रूर छट जाता है।

और असली इंसान है वो।

जो अपने उसूलों पे डट जाता है।

मन में सत्य लिए चीटी।

हाथी के आगे तन जायेगी।

दिशाहीन सी डगर फिर से।

बेहद हसीन बन जायेगी।

कभी झरोखा जाएगा।

तो कभी चिलमन जायेगी।

पहले सांसें जाएंगी।

या पहले धड़कन जाएगी।

शायद तकदीरें बदलेगी।

वो सुबह जो कल आएगी।

इस जड़ से जीवन में।

जल्दी ही कोई हलचल आएगी।

नहीं पुकारूंगा तुझको।

तू ख़ुद एक दिन चल आएगी।

नाम नहीं लूंगा फिर भी।

तेरी याद तो हर पल आएगी।

5.Kabhi Khatam

Nahi Hogi

तू जानती है मैं वहीं हूंगा।

मैं जानता हूं तू वहां नहीं होगी।

कहां जाऊं यादों से भाग के।

हर जगह लगे तू यहीं कहीं होगी।

तेरे इंकार और मेरे इंतज़ार की।

इन्तिहा कभी सनम नहीं होगी।

ये कहानी तेरे मेरे प्यार की।

मेरी जान कभी खतम नहीं होगी।

कभी न मानेगी जो मैं कहूंगा।

सब तू पहले ही जान गई होगी।

जब दिखता था तू रोज़ जाग के।

वैसी सुबह तो आज नहीं होगी।

ये दुआएं मेरी सारी बेकार की।

पूरी तो कभी हमदम नहीं होंगी।

ये कहानी तेरे मेरे प्यार की।

मेरी जान कभी खतम नहीं होगी।

वो नहीं मैं जो तू ढूंढती थी।

शायद ही तेरी खोज भी पूरी होगी।

पीने हैं हमें रोज़ जाम आग के।

बिन तेरे जिंदगी ये अधूरी होगी।

इस ढोंगी और उस समझदार के।

बीच दूरियां ये कभी कम नहीं होंगी।

ये कहानी तेरे मेरे प्यार की।

मेरी जान कभी खतम नहीं होगी।

आयेगा एक दिन जब नहीं कहूंगा।

उस दिन तू फरियाद कर रही होगी।

पा सुकून तू खुद को सही मान के।

अंत में मेरी बात ही सही होगी।

मेरी पुकार और तेरे खुमार की।

उंस ज़ाया कभी मेहरम नहीं होगी।

ये कहानी तेरे मेरे प्यार की।

मेरी जान कभी खतम नहीं होगी।

6. Vjlati

Musavvir

उजलत बेसबरी ने मुसव्विर का सुकून छीना।

फ़ुरसत की दिल्लगी ने उन्हें सिखा दिया पीना।

गफलत थी वो खुशी जो मुफ्त चाहिए थी।

ज़रा ज़हर लाइए जी अब और नहीं जीना।

ख्वाब ए ज़िंदगी में कई बार दिल था टूटा।

अब भी हैं सोए न इस लत का साथ छूटा।

जाने मुसव्विर किसका इंतज़ार कर रहे हैं।

खुद से प्यार कर रहे हैं या खुद को है लूटा।

गम से भरी आंखों से नहीं अश्क निकलने दे।

उन्हें आग बना के उनमें ख़ुद को पिघलने दे।

ख़ुद को ख़ुद से सम्हलने दे मत ढूंढ सहारा।

कोई नही यहां हमारा हमें खुद में ही जलने दे।

कुछ हिस्सा इस मन का रोज़ ही है मरता।

बेजान मुसव्विर को नहीं इस से फर्क पड़ता।

मरता क्या ना करता कुछ भी नहीं किया पर।

शिकस्त मान ली फिर कब तक ही लड़ता।

ना उम्र ना मौके बस हौसले के सहारे।

बड़े बुजदिल निकले मुसव्विर बेचारे।

प्यारे अगर है दम तो वो कर के दिखा।

जो नहीं लिखा जो नहीं बताते सितारे।

7. Duniya Mein

Sabse Pasand

बात करते करते जो ।

दोनो चुप हो जाते थे।

वो हसीन पल सबसे ।

ज़्यादा याद आते थे।

रोज़ लड़ते लड़ते ।

दोबारा पास होते थे।

भूल के गुस्सा लिपट।

के रोज़ सोते थे।

ना हो खफा जो कुछ दिनों ।

से बात अब बंद है।

तू अब भी हमको ।

दुनिया में सबसे पसंद है।

मुख्तलिफ अरसा गुज़र ।

भी गया तो क्या होगा।

फन को उजलत से भला ।

कोई फ़ायदा होगा।

मुसव्विर तो यूं ही कह गए ।

तस्वीर को अलविदा।

उस बेजान को था क्या पता ।

सब उसपे हैं फिदा।

इल्म ही न था कि अब ।

बचे मौके चंद हैं।

वो अब भी हमको दुनिया।

में सबसे पसंद हैं।

किसे इश्क कहते हैं ।

सोचते बस ये रहते हैं।

दर्द से प्यार करते हैं ।

या उसको सहते हैं।

जिंदगी ख्वाबों में जीनी है ।

या ये जहान फसाना है।

या मदहोशी में फना होने का ।

ये सब बहाना है।

मंसूबों की महक लगती ।

अब नाकामी की गंध है।

पर वो अब भी हमको दुनिया।

में सबसे पसंद हैं।

8. Dekhi Hain

Chotil aur toote dil ki,

Mai se behtar koi dawa nahi,

Is madhosh si mehfil mein,

Tujhsi koi diruba nahi,

Humne bhi wohi sab dekha hai,

Jo sabki yahan kahani hai,

Waisi hi raat hamari hai,

Jiski kabhi hoti subah nahi.

Tere dard ki umra hai kam shayad,

Par uns aah mein shaamil hai,

Aankhon mein ashk rahenge sada,

Raahgir ka ghar na manzil hai,

Ye dil hai dukh ke rehne ke liye,

Kisi aur ki isme jagah nahi,

Do pal ki dillagi ke liye ise,

Do pal ki bhi mohlat na haasil hai.

Teri aakhon si sundar humne,

Pehle bhi nazarein dekhi hain,

Pehle bhi ye manzar dekha hai,

Pehle bhi ye baahein dekhi hain,

Pehle bhi ye baazi haari hai,

Phir haar gaye to harz hai kya,

Jaane ki hamara marz hai kya,

Sab vaid dawayein dekhi hain.

9. Intezaar Ki

Had

इंतजार की हद।

हमसे हरगिज़ न पूछो।

हसरतों की उमर में।

दिन ज़िद के भी जोड़ो।

लगाव दो पल का।

ना इस आशिकी को समझो।

दिल में सनम रहेंगे।

जाने की बात छोड़ो।

दिल में हमेशा मेरे।

बस तेरी धड़कने हैं।

जुड़ फिर नाम लेगा तेरा।

जितना भी इसको तोड़ो।

बसीरत तेरी सीरत से।

मेरी रूह को है हासिल।

इस मोहब्बत को बोल।

हम कैसे भूल जाएं।

इंतजार में तेरी नज़र के।

हैं बैठे पलकें बिछाए।

आ जाना फिर वापिस ।

हम जब भी याद आएं।

10. Kuch

Lage

तसव्वुफ है सीखा।

है जाना तरीक़ा।

इश्क़ बिन फीका।

सब कुछ लगे।

नहीं आता रोना।

पराया क्या खोना।

उनका होना न होना।

न अब कुछ लगे।

घोटते दम को।

दूर करते भरम को।

बुला लेना हमको।

जब कुछ लगे।

हवाओं के झोंके।

मतलबी झरोंके ।

हैं दूसरों के।

कब कुछ लगे।

न दर्द ए दिल ने।

दिया गुल खिलने।

गए थे बस मिलने।

पर रुसवा हुए।

जिनसे लड़ते थे।

जिनपे मरते थे।

वो क्या हुआ करते थे।

अंत में क्या हुए।

मजनू मजलिस के।

बारूद माचिस के।

कब थे किसके।

जो अब तन्हा हुए।

ना समझो समझाओ।

ना पूछो बताओ।

उन्होंने कहा जाओ।

तो तखलिया हुए।

11. Khoya

Sukoon

To kya sapne dekhti hain aap.

Aur kya khwahishen hain aapki.

Dekhiye ki zara sa roobaroo huye.

Aur rukhsatgi ho gayi janab ki.

Aitraaz na ho to aapki.

Nasheeli nigahon ko dekh loon.

Ki inse madhosh ho jaati hai kaaynat.

Ki jab ye hain to kya zaroorat sharab ki.

Madmast hain hoshohawas.

In nazaron ke asar se.

Jagmaga jate honge raaste wo.

Nikalti hogi tu jidhar se.

Mat soch ki ye sach nahi.

Jo tere liye keh raha hoon mein.

Dekh le khud ko bas ek baar.

Tu meri nazar se.

Jaane aapse aaj hamara.

Raasta ye kyun mila.

Is pal ko aapki pehli yaad.

Mein lo deta hoon mila.

Bade dinon se ye kehne ka.

Intizaar kar rahe the hum.

Aapse ye sab bolkar.

Aaj wo khoya sukoon mila.

12.Tarkash E

Adam

तरकश में आदम के हथियार बेशुमार हैं।

सच को समझने की कोशिश तो करो।

सही वक्त का जो कर रहे इंतज़ार हैं।

हो गया है वो अभी खत्म ये रंजिश करो।

पूरी मदहोशी में आज तुम कसम ये लो।

साबित करो कि तुम जो कहते हो वो हो।

इस खामोशी के लिए खुदको तैयार करो।

साबित करो कि तुम जो कहते हो वो हो।

भर लो सांस और कूद पड़ो गहराई में।

ये जो पल है बीता फिर से आएगा नहीं।

ढूंढ लाओ दृढ़ निश्चय जो छुपा है तन्हाई में।

ये जो तुम्हें पता है ये कोई बताएगा नहीं।

आओ लड़ो हुआ बहुत अब न पीछे हटो।

शौर्य न्याय से लो निर्णय खत्म वैशियत करो।

रखो भरोसा और आगे आँखें मीचे बढ़ो।

अपराजेय हो जो तैयार ऐसी एक शक्सियत करो।

बहुत कर चुके नरफत अब मोहब्बत करो।

बहुत कर चुके नरफत अब मोहब्बत करो।

13.Marz E

Mohabbat

बात तो छोटी सी थी।

पर उनको नहीं सही लगी।

जहां पे नहीं लगनी थी।

जाके गोली वहीं लगी।

मरीज़ तो अपने मर्ज़ के।

फिरते थे इलाज ढूंढते।

पर घावों की निशानियां।

वैध को नहीं सही लगीं।

तड़पते हुए बरखुरदार।

कतई काबिल ए एतराज़ हैं।

अपनी हरकतों से वो।

नहीं आते बाज़ हैं।

गलत है उनसे भी करना।

उम्मीद कि वो ये सब सहें।

वो तो बस एक ख़्वाब हैं।

जिसके कि सब मोहताज हैं।

उनकी नज़र अपनी नज़र।

अलग हैं नज़ारे देखतीं।

नज़रंदाज़ ये ऐब कर।

काश जस्बात हमारे देखतीं।

पर नजदीकियां की आस भी।

करना ही एक गुनाह था।

और नाराज़ होने के बाद वो।

नहीं मुड़के प्यारे देखतीं।

14. Kya Hi

Kaam Haai

उनका तरीका उनका सुकून।

है बहुत ही महत्वपूर्ण।

आपकी हरारतों का।

यहां क्या ही काम है।

कायदा ए मोहतरम।

है निहायत ही मुद्दम।

आपकी शरारतों का।

यहां क्या ही काम है।

जहां सरसरा संयम हो।

फिज़ाएं गाती सरगम हों।

आपकी बालाओं का।

वहां क्या ही काम है।

जब नीयत देखी जाती हो।

जब पलक होती जस्बाती हो।

तब आपकी बुरी नज़र का।

वहां क्या ही काम है।

धैर्य और कर्म का जो घर हो।

न कोई अवगुण का अवसर हो।

तो आपकी बुरी आदतों का।

वहां क्या ही काम है।

सभ्यता से आपका ।

क्या ही सरोकार है।

बेगैरतों के बाज़ार में।

कौन आपसे बेकार है।

उनकी इनायतों के।

आप कर्ज़दार हैं।

आपकी फरमाइशों का ।

यहां क्या ही काम है।

मुबारक हो आपको।

दो पल की जो खुशी मिली।

आश्चर्य हो रहा था।

कैसे थी आपको परी मिली।

पर जो आपको नहीं मिलनी थी।

आखिर वो आपको नही मिली।

आपके घड़ियाली आसुओं का।

अब यहां क्या ही काम है।

आपके नाम पे।

बहुत वक्त ज़ाया हो चुका।

इस इम्तिहान पे।

बहुत वक्त ज़ाया हो चुका।

आपकी विफलताओं पे।

बहुत वक्त ज़ाया हो चुका।

आपके बहनों का।

यहां क्या ही काम है।

आपसे दीवानों का।

बुजदिल बेईमानों का।

जाने का सही वक्त है।

अब अंजानों का।

यहां क्या ही काम है।

15.Kaayaron

Ka

Hindustan

कायरों का हिंदुस्तान।

उन प्राचीन द्रविदों के घर सा।

आर्यनों के लिए अवसर सा।

सिंधु के तट पे पला बढ़ा।

गंगा की उपज वेदों की धरा।

हर सोच को समझने वाला हिंदुस्तान।

पृथ्वी के हर टुकड़े से निराला हिंदुस्तान।

अनंत काल से असीमित दायरों का हिंदुस्तान।

कैसे बन रहा है कायरों का हिंदुस्तान।

पराक्रम की डोर में पिरोया हो जैसे।

इतिहास और उपहास में खोया हो जैसे।

ऊंच नीच भेद भाव में फंसने वाला।

कैसे बन गया अन्याय देख हंसने वाला।

शांतिप्रिय समावेशी सत्यवादी हिंदुस्तान।

भूल गया है जंग ए आज़ादी हिन्दुस्तान।

इंसानियत के फन में माहिरों का हिन्दुस्तान।

कैसे बन रहा है कायरों का हिंदुस्तान।

देखता दुष्प्रयोग रोज़ होते धर्म का।

लिया प्रचार ने अब स्थान कर्म का।

डरता बिकता घुटता सा वतन।

स्वेच्छा से लुटता सा वतन।

सांस्कृतिक सौंदर्य से सुसज्जित हिन्दुस्तान।

भय के कारण हो रहा है लज्जित हिन्दुस्तान।

था हमेशा कवियों शायरों का हिन्दुस्तान।

कैसे बन रहा है कायरों का हिन्दुस्तान।

16.Itni Pyari

Hasi

इतनी प्यारी हँसी है।

जानम क्या बताएं।

कोई तुझसे सुंदर नही।

इतनी प्यारी हँसी है।

जानम क्या बताएं।

कितनी प्यारी हँसी है।

छोड़ के तेरे शहर को।

बोल कहाँ जाएं अब हम।

भूल ही नही पाएंगे।

तेरी अदाएं अब हम।

तेरे कदमो के निशान पे।

छुप के हक जताएं अब हम।

गज़ब मौसिकी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

इतनी प्यारी हँसी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

तेरी बातें याद कर के।

रोज़ मुस्कुराएं अब हम।

खुदको तुझमें आज खोके।

बस फना हो जाएं अब हम।

तुझे सपनों में पाने को।

बेनीन्द सोजाएं अब हम।

ऐसी जादूगरी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

इतनी प्यारी हँसी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

कभी रूठती ही नही है।

तो कैसे मनाएं अब हम।

तेरी साँस की गर्मी से।

आग ए दिल बुझाएं अब हम।

देख तुझे बेशर्मी से।

फिर उसे जलाएं अब हम।

ऐसी आदत पड़ी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

इतनी प्यारी हँसी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

तेरी एक झलक पाने को।

तेरी गली आएं अब हम।

जिधर भी नज़र घुमाएं।

बस तुझे ही पाएं अब हम।

तेरे कदमों में बिछा दें।

चारों दिशाएं अब हम।

ऐसी मोहब्बत चढ़ी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

इतनी प्यारी हँसी है तेरी।

की क्या बताएं अब हम।

इतनी प्यारी हँसी है।

जानम क्या बताएं।

कोई तुझसे सुंदर नही।

इतनी प्यारी हँसी है।

जानम क्या बताएं।

कितनी प्यारी हँसी है।

17. Yaad Aayi

Hai

धधकती सुगबुगाती लौ।

तेरे रंग से नहायी है।

हमें हर बार के जैसे।

फिर से तेरी याद आयी है।

मचलती चमचमाती रात।

फिर से जगमगाई है।

हमें हर बार के जैसे।

फिर से तेरी याद आयी है।

सवरने की ज़रूरत क्या।

तुझे ऐ हुस्न की मलिका।

तेरी सूरत की यादों में।

रब ने जन्नत बनाई है।

जहन्नुम की लपट से भी।

बुरी तुझसे जुदाई है।

हमें हर बार के जैसे।

फिर से तेरी याद आयी है।

फिसलती रेत की जैसी।

चली जाती हो ऐसे दूर।

हथेली छोड़ के खाली।

जैसे कोई रिश्ता ना हो।

ढलती दोपहर जैसी।

मद्धम मुस्कुराती हूर।

सुरमयी से नैनों वाली।

कैसे तुझपे फिदा ना हों।

चाहे कोई कायदा ना हो।

किया कोई वायदा ना हो।

किसी का फायदा ना हो।

आशिक़ी पर निभाई है।

तभी तो हार के ऐसे।

जाने क्यों कब और कैसे।

हमें हर बार के जैसे।

फिर से तेरी याद आयी है।

न माफी और न कोई रहम।

न कोई शक शुबा न वहम।

तेरे जाने के डर से सहम।

हमने रातें बिताई हैं।

न शोहरत और न पैसे।

से होनी तेरी भरपाई है।

हमें हर बार के जैसे।

फिर से तेरी याद आयी है।

सवरने की ज़रूरत क्या।

तुझे ऐ हुस्न की मलिका।

तेरी सूरत की यादों में।

रब ने जन्नत बनाई है।

जहन्नुम की लपट से भी।

बुरी तुझसे जुदाई है।

हमें हर बार के जैसे।

फिर से तेरी याद आयी है।

18.Bhakti

भाड़ में गयी भक्ति.

जानो अपनी शक्ति.

सोई हुई रूह तुम्हारी.

जाने कैसे नहीं जगती.

गरीब कतारों में है.

मौतें हज़ारों में हैं.

समझदार गिना जाता.

गैंगों और गद्दारों में है.

कभी धार्मिक नफरत.

कभी जातियों से गैरत.

भक्तों के दम पे देश.

तोड़ना है इनका मक़सद.

ना हैं किसान इनके.

ना मुस्लमान इनके.

भक्तों को बस चाहिए.

हुक्मरान इनके.

गौमूत्र, लव जेहाद.

लिंचिंग दंगा फसाद.

नोटेबंदी, जीएसटी.

पुलवामा और 370.

सीएए कोरोना त्रासदी.

किसानों की बर्बादी.

कौन है खतरे में.

कौन है आतंकवादी.

ये बातें आपको.

अच्छी नहीं लगती.

आपमें अकल नहीं है.

आपमें है बस भक्ति.

19. Koi Farak Hi

Nahi Padta

जो सोये हैं वो जागेंगे.

मुर्दे भी उठ के भागेंगे.

सारी सीमाएं लाँगेगे.

आगे नहीं तो किधर बढ़ता.

घर में मरे तो कायर हैँ.

लड़ के मरे तो हुए शहीद.

ऐ कायर मैं तेरा मुरीद तुझे.

कोई फरक ही नहीं पड़ता.

मिट्टी में खून की बूंदों में.

है गाथा उनके साहस की.

गर बना ना ढाल तू बेबस की.

तू कल मरता, तू आज मर जा.

गलत को कहते रहें सही.

इतने भी हम लाचार नहीं.

हम अपनी बात पे कायम हैं.

हमें कोई फरक ही नहीं पड़ता.

की कौरव कितने बलशाली हैं.

मारा की अगली चाल है क्या.

पल, घंटे, दिन और साल हैं क्या.

हमें कोई फरक ही नहीं पड़ता.

तो मुट्ठी बाँध लो हाथ उठा.

कोई सच जैसा मक़सद है क्या.

हो तुझे पता तो मुझे बता.

ना दिल होता ना कोई लड़ता.

पता है हार तो होनी है.

मुद्दा है ये जज़्बातों का.

इन सब बेकार की बातों का.

हमें कोई फरक ही नहीं पड़ता.

हम निर्बल हैं तो वैसे सही.

हमें कोई फरक ही नहीं पड़ता.

समय की नदिया बहती रही.

हमें कोई फरक ही नहीं पड़ता.

बदले दिन और आयी रात नयी.

जो बीत गयी सो बात गयी.

जो करना था वो किया नहीं.

पर कोई फरक ही नहीं पड़ता.

20. Sab Bacha

Hai

जो हुआ सो हुआ.

ना दुआ ना बद्दुआ.

क्यों हुआ क्या हुआ.

किधर या कहाँ हुआ.

ना तरीक़ा ना कायदा.

ना वचन ना वायदा.

ना मछली ना परिंदा.

ना शर्मसार ना शर्मिंदा.

क्यों हुआ क्या हुआ.

बेकार चर्चा है.

जो हुआ सो हुआ.

अभी सब बचा है.

अभी जीवन बचा है.

अभी समय बचा है.

अभी दुनिया बची है.

दृंढ निश्चय बचा है.

जय पराजय में बनना.

समन्वय बचा है.

मन के किसी कोने में.

अभी भी भय बचा है.

जो हुआ सो हुआ.

वो अब नहीं बदलेगा.

तख़्त, फर्ज़, मोहब्बत.

बता तू क्या लेगा.

खुद ही सम्हलना होगा.

खुद कुछ नहीं सम्हलेगा.

परस्पर परिश्रम ही.

हल है मसले का.

होना अपने आप से.

परिचय अभी बचा है.

सही गलत का लेना.

निर्णय भी बचा है.

कुछ करने का विचार.

ही जब बचा है.

तो जो हुआ सो हुआ.

अभी सब बचा है.

21. Koi Shakti

Mujhe Rok Nahi

Sakti

कोई शक्ति मुझे रोक नहीं सकती.

किसी भी तरफ मुझे मोड़ नहीं सकती.

मेरे इरादों की गंध सोक नहीं सकती.

मेरे खुद से वादे को तोड़ नहीं सकती.

कोई ताक़त मुझे रोक नहीं सकती.

कोई आदत मुझे रोक नहीं सकती.

मेरा खुद से वचन है कि सही करूंगा.

मुझे अपनी कसम है कि सच कहूँगा.

आज़मा ले तू ज़ोर मैं खड़ा रहूंगा.

गलत क्यूँ मानूँ, मैं नहीं मानूंगा.

मैं लडूंगा, मैं लडूंगा, मैं लडूंगा.

तुम दबाओगे पर हार नहीं मानूंगा.

दफ़्नाओगे मुझे, तब भी कहूँगा.

मैं लडूंगा, मरोगे तो मरूंगा.

पर लडूंगा, नहीं मानूंगा, मैं लडूंगा.

जितना हो दम आज़मालो.

अब मेरा दाव भी सम्भालो.

दुनिया की दबिश से मुझे डर नहीं.

कायनात को मुझसे बचालो.

क्यूंकि कोई शक्ति मुझे रोक नहीं सकती.

मेरा निश्चय है कि कोशिश करूंगा.

ज़रूर ज़ोरआज़माइश करूंगा.

नामुनासिब सी ख्वाहिश करूंगा.

तुम मरोगे तो मरूंगा.

पर लड़ूंगा, मैं लड़ूंगा.

कोई शक्ति मुझे रोक नहीं सकती.

22. Fayda

जनाब ना बताइये कायदा.

बोलिये क्या होगा फायदा.

फरमाइए फरमाइशों की फेरिस्त.

पेशएखिज़्मत है झूठा वायदा.

बड़ी बेतुकी सी बात थी.

बेफ़िज़ूल की वारदात थी.

पल में परेशानी ने किया चित्त.

मामूली सी मुश्किलात थी.

बेइन्तिहाँ बर्बाद हुए कम्बख्त.

ना रही तिशनगी ना मिला तख़्त.

दफ़्न हुए दीवाने दलबल सहित.

मुसलसल मौतजा से जाने के वक़्त.

तारीफ में कसीदे बेवजह लिखना.

ज़िन्दगी जीने की दास्ताँ लिखना.

मौत पे क़ब्र के पत्थर पर तोड़ रिवायत.

हर्फों से फकत नाम खुदा लिखना.

23. Yaad Tum

Ho

ना फलसफे ना नग्मे.

ना कायदे ना किस्से.

जाने पूछना है किससे.

ना कुछ याद जब हो.

ना खुशियाँ ना सदमे.

तुम ही अब सब हो.

हो तुम गुमसुम क्यों.

मुझे बस याद तुम हो.

वो तेरा हसना मुस्कुराना.

कहते कहते चुप हो जाना.

कुछ घड़ियाँ हैँ बाकी.

साँसे बची हैँ बहुत कम.

ना तारीफ़ें ना तरीके.

ना शरारतें ना सलीक़े.

ना बूझे ना ही दीखे.

पर करना करतब हो.

जैसे हों इलाह कहीं के.

कुछ होना है तो अब हो.

हो जाएं सिफर में गुम यों.

मुझे बस याद तुम हो.

मेरे हर गलत को सही बनाना.

मेरी घिसी पीटी को नयी बताना.

एक दिन याद आएगा की.

बड़े ख़ुशक़िस्मत थे हम.

ना सबक ना सलाहें.

ना समझें ना समझाएं.

जाएं तो कहाँ जाएं.

ना कुछ बचा जब हो.

क्या कहें क्या कहलाएं.

जब बेज़ुबान लब हों.

सुगंध बिन ना कुसुम हो.

मुझे बस याद तुम हो.

होगया इश्क़ में खोके दीवाना.

ना कोई बेहेस ना कोई बहाना.

मोहब्बत हुई है हमको नाकी.

हुआ है रहनुमा का रहम.

24. Kuch Mat

Bol

यार मेरे तू कुछ मत बोल.

ये आँसू कहानी कह लेंगे.

ढूंढ़ने की ना कर कोशिश.

हम खोये हुए ही रह लेंगे.

जो है इस दिल का माहौल.

कैसे बोलें कहें किससे बता.

दर्द से चीख ना जाए निकल.

तो उसे चुपचाप ही सह लेंगे.

ना अपने रहे ना हुए किसी और के.

ना हैँ सुकून से पड़े ना हैँ हिस्से दौड़ के.

ना रहे वैसे जैसे थे आम तौर पे.

लानत है हमपे या थू है इस दौर पे.

उदास है तो तुझे हुई मोहब्बत नहीं.

पर सच जीवन है किस्मत नहीं.

तू अपना दर्पण है कोई इनायत नहीं.

बहेगा रक्त तो कम्बख्त हम भी बह लेंगे.

ढयेगी कायनात तो हम भी ढ़य लेंगे.

दर्द से चीख ना जाए निकल.

तो उसे चुपचाप ही सह लेंगे.

यार मेरे तू कुछ मत बोल.

ये आँसू कहानी कह लेंगे.

प्यार फना करदेगा हमें.

ना मिलेंगे नामोनिशान कहीं.

ढूंढ़ने की ना कर कोशिश.

हम खोये हुए ही रह लेंगे.

25. Pyar Kar Lena

Chahiye

Agar marz marzi ka tha to pyar kar lena chahiye tha,

Masla agar khudgarzi ka tha to pyar kar lena chahiye tha,

Agar nikaah hi padhna tha to aapko pyar kar lena chahiye tha,

Agar bin maut hi marna tha to aapko pyar kar lena chahiye tha,

Agar khud ko khush rakhna tha to aapko pyar kar lena chahiye tha,

Aur agar khud khushi karni thi to aapko pyar kar lena chahiye tha,

Agar aazadi hi chahiye thi to aapko pyar kar lena chahiye tha,

Agar shaadi hi karni thi to pehle pyaar kar lena chahiye tha,

Abhi to sach acchaa hai kyun ki lagta hai pyar kar lena chahiye tha,

Par jab sach mein samay nikal jayega to lagega ki pyar kar lena chahiye tha,

Chaliye is hi aas ke saath ki aapko pyar kar lena chahiye tha,

Karenge kal phir prayaas ki aapko pyar kar lena chahiye tha.

Agar aisi khushnasibi chahiye thi ki yaad kiye jayein to pyar kar lena chahiye tha,

Agar do pal ki hasi bhi chahiye thi ki has ke barbaad kiye jayein to pyar kar lena chahiye tha,

Marte marte jab unhone poocha ki koi gila shikwa to nahi,

To humse raha nahi gaya aur humne kaha pyar kar lena chahiye tha.

26. Paristhitiyaan

कभी हम फ़लक़ हैं.

कभी फलकनुमा हैं.

कभी हम गर्त हैं.

तो कभी आसमान हैं.

कभी गुमसुम हैं.

तो कभी गुमशुदा हैं.

क्या बताएं कहाँ हैं.

बस परिस्थितियां हैं.

कभी हम अमर हैं.

कभी जैसे मुर्दा हैं.

समुन्दर की मछली हैं.

गगन का परिंदा हैं.

कभी गुस्सा हैं.

कभी शर्मिंदा हैं.

अभी मरे नहीं हैं.

अभी ज़िंदा हैं.

अभी आये अभी चलते हैं.

बस दो पल के मेहमान हैं.

जाने क्या करते हैं.

जाने कैसे इंसान हैं.

कभी गुरु हैं.

कभी नौसिखिया हैं.

वो बन जाते हैं.

जैसी परिस्थितियां हैं.

चामचीड़ी नहीं हैं.

सोनचिड़िया हैं.

हम बुरे नहीं हैं.

बहुत बढ़िया हैं.

कभी कोठरी हैं.

कभी वादियां हैं.

क्या बताएं कहाँ हैं.

बस परिस्थितियां हैं.

27.Burc

Hain

तेरी ख़ुशी लहू जलाती है.

पर तेरे ग़मों से क्या लेना.

ख़ुशक़िस्मत से घिन आती है.

बदकिस्मत से क्या लेना.

ख़ुशी छीनने के ढूंढे मौके.

घम बाँटने से क्या मतलब.

मन ईर्षा से लबालब होके.

कहाँ मदद की सोचेगा जब.

उसने मान लिया है अब की हम सब बुरे हैं.

लालच से भरे हैं.

सब बुरे हैं.

सब बुरे हैं.

शब्दों के मतलब जब उलट जाते हैं.

सही गलत नहीं जब समझ पाते हैं.

कुतर्कों के जाल में उलझ जाते हैं.

तब जाके अच्छे लोग याद आते हैं.

ना दिखा दर्द ना मांग साथ मेरा.

भलाई से मुझे क्या लेना देना.

मुझसे मज़े की बस कर बात सदा.

अब भाई को भाई से क्या लेना.

तेरी परेशानियां हैँ ज़्याती.

सुनने का सब्र मुझमे नहीं है.

मेरे सिवा सब हैँ मेरे दुश्मन.

हम सब में बुराई भर गई है.

क्यूंकि मान लिया है सबने की सब बुरे हैं.

स्वार्थ से भरे हैं.

सब बुरे हैं.

सब बुरे हैं.

बेकार ही क्यूँ सतह बदलवाते हैं.

अरमानों की हवस में बहे जाते हैं.

बहुत हुई दौड़ अब रुक जाते हैं.

चलो सही दिशा में ही बढ़ जाते हैं.

आज दिल में छुपी अच्छाई को जागते हैं.

आज से चलो सब अच्छे बन जाते हैं.

27. Ufaan

बरसों से ज़मीन हावी थी.

आज समुन्दर में उफान आएगा.

बरसों से जड़ता छायी थी.

पर आज यहाँ तूफ़ान आएगा.

सवालों से बरसों हारे थे.

फिर कोई इम्तिहान आयेगा.

वही गलती दोहरा रहे थे.

तो फिर धक्का सहा जाएगा.

बरसों से कुदरत गुमसुम थी.

आज पिंजड़े में इंसान आएगा.

हवाएं हमेशा निर्मम थीं.

पर आज यहाँ तूफ़ान आएगा.

मज़बूरी हो जब दबके रहना.

तो उड़ के तू कहाँ जाएगा.

पड़ेगा लहरों संग ही बहना.

तो फिर धक्का सहा जाएगा.

बरसों इन्साफ की किल्लत थी.

आज समाज का शव शमशान आएगा.

बरसों से बहुत दिक्कत थी.

पर आज यहाँ तूफ़ान आएगा.

जो कभी कहीं सही मौका आएगा.

तो गलत को गलत पक्का कहा जाएगा.

तो फिर जब आज तूफ़ान आएगा.

तो बस एक और धक्का सहा जाएगा.

28. Aaj Ka

Ram

कठपुतलियों की मजलिस में.

एक किरदार वो आम होगा.

इन्साफ पाने की कोशिश में.

नहीं कभी वो नाकाम होगा.

अमीरों की सामाजिक साज़िश में.

लाज़मी है सबका भटक जाना.

पर वो जो मर्यादा नहीं लांघेगा.

बस वही आज का राम होगा.

थक गए फ़िज़ूल दौड़ हम.

ले चलो हमें कहीं आगे.

आओ मर्यादा पुरुषोत्तम.

कलियुग तुम बिन सुनो लागे.

बैरागी बेखौफ़ बेपरवाह वो होगा.

उसके ज़मीर का ना कोई दाम होगा.

वो कर्मयोगी ये इल्म जानता होगा.

कि टालने से नहीं कभी कोई काम होगा.

जिसका वक़्त आजाये.

वो क्रिया हो ही जानी है.

संकल्प इच्छा शक्ति से.

प्रकट अंतरमन में राम होगा.

सत्य अहिंसा है गुम.

विनाश की ओर बढ़ते अभागे.

आओ मर्यादा पुरुषोत्तम.

कलियुग तुम बिन सूनो लागे.

29. Bhoola

Nahi Jayega

क़ुदरत क़त्ल करती है.

क़यानत भी बिखरती है.

दो कौड़ी बढ़ा के क्या पायेगा.

पाखण्ड भूला नहीं जायेगा.

दौड़ में चोर थे दोनों.

सीनाजोर थे दोनों.

ताकतें कितना तड़पाएंगी.

बातें भूली नहीं जाएंगी.

शाही फरमान मारते हैं.

हमको हसके धुत्कारते हैं.

एक प्रचंड ज्वार आएगा.

घमंड भूला नहीं जायेगा.

ना रोटी और ना काम.

अपनी राम राम राम.

चिंगारी आग लगाएगी.

गैरत भूली नहीं जाएगी.

पैसा पल कुछ और देगा.

पर इन्साफ कौन देगा.

नागरिक वापिस आएंगे.

धोखे भूले नहीं जायेंगे.

धार दिल से गुज़रती है.

बस तकलीफ बढ़ती है.

अभिलाषा बेकार सड़ती है.

फिर भी आशा लड़ती है.

क़ुदरत क़त्ल करती है.

क़यानत भी बिखरती है.

और कितना खून बहायेगा.

कितनी क़ब्र खुदवायेगा.

बस ज्ञान ही बचाएगा.

तब सब ठीक कहलायेगा.

जब इंसान इंसान के काम आएगा.

हर कोई मदद करना चाहेगा.

दो कौड़ी बढ़ा के क्या पायेगा.

अजनबियत कब तक निभाएगा.

सच को कैसे झुठलायेगा.

कुछ भी भूला नहीं जायेगा.

30. Sab Band

Hai

सरकारें आपको भूल भी चुकी हैं.

सब बंद है आप सडकों पे सोइये.

मत बताइये गांव में माँ पत्नी भूखी हैं.

सब बंद है आप चाहे मरिये या रोइये.

हज़ूर शायद अस्पतालों को दुरुस्त कर रहे हैं.

कितने अमीरों को भी बचा पाने की दम है.

आपकी जागती संवेदनाओं से वो डर रहे हैं.

मत रुकिएगा दूसरे के लिए मर जाना भी कम है.

चाहे सब बंद हो पर सच से आँखें मत चुराइए.

अगर इंसान की औलाद हैँ तो जाग जाइये.

सब आप पे है छोड़ दिया वो नहीं आएंगे.

साहब बालकनी वालों की टीवीयों में छाएंगे.

सब बंद है पर नफरत की दुकान खुली है.

पुरानी चिढ नये रंगों में घुली है.

लाल और हरे से जाने कितना बैर है उनको.

समझ जल्दी ही आने वाला खैर है उनको.

कि मनुष्य लोभ के कारण दुखी हैं.

प्रतिस्पर्धा के और बीज मत बोइये.

और सब बंद हैं सब बंद हो चुकी हैं.

धर्मान्धता की इन गलियों में दोबारा मत खोइए.

सरकारें आपको भूल भी चुकी हैं.

सब बंद है आप सडकों पे सोइये.

मत बताइये गांव में माँ पत्नी भूखी हैं.

सब बंद है आप चाहे मरिये या रोइये.

31.Hum Kaun

Hain

Hum kaun hain,

Hum kya hain,

Khoye hain,

Laapata hain,

Kya hum marz hain,

Ya dawa hain,

Uttejit bewajah hain,

Khamosh khamakhan hain,

Hum kaun hain,

Hum kya hain,

Chup hain,

Ya bezuban hain,

Muflis hain,

Badshah hain,

Shanti doot hain,

Ya aakranta hain,

Mazboot hain,

Ya dhuan hain,

Qayanat hain,

Ya zarra hain,

Sacche hain,

Ya beimaan hain,

Hum kaun hain,

Hum kya hain,

Hum kaun hain,

Hum kya hain.

32. Parhez

Karo

Suno bhaiya,

Ghabraye ho,

Koi baat nahi,

Par gusse se,

Parhez karo,

Koi ladwaaye,

To mat lado,

Ghrina se zara,

Parhez karo,

Galti se,

Behek jaana,

Dar ke mausam,

Mein mumkin hai,

Pata nahi kaun,

Sa hai mahina,

Aaj jaane kaun,

Sa hi din hai,

Aise mein,

Nafrat faili hai,

Badi aasani se,

Sar phirte hain,

Prakiti kya,

Mitayegi humein,

Lo hum khud hi,

Gart mein girte hain,

Kyun wo chaahte hain,

Ki sadbhaav hate,

Nyaya ka matlab

Ho unka hukum,

Kisi bhi tarah,

Ye samaaj bate,

Chooha jeb katke bole,

Billiyon lado tum,

Bada naazuk hai samay,

Badi samajhdari chahiye,

Abhi mat kuch,

Sansanikhez karo,

Sahab galat varnan ke,

Jhaanse mein na aaiye,

Gumraah karne walon se,

Bhaiya parhez karo,

Dekho bhaiya,

Ghabraye ho,

Koi baat nahi,

Par gusse se,

Parhez karo,

Koi ladwaye,

To mat lado,

Ghrina se zara,

Parhez karo.

33. Insaan

Apni Raah

आज कल तो नहीं.

पर ज़रूर फिर कभी.

मिलेंगे फिर वहीँ कहीं.

मज़ा आएगा तभी.

जब फिर बाज़ारों में भटकेंगे.

बड़े परदे को ताकेंगे.

इकट्ठे साथ में मटकेंगे.

लम्बी लम्बी फिरसे हांकेंगे.

वैसे भी दुनिया को.

हथेली पे तूने समेटा है.

बिता ले आराम की घड़ियाँ दो.

कल किसने देखा है.

अड़ंगे तो आते ही रहते हैं.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

संयम से संभाल कर.

देख दीवारें देख छत.

अपनों का ख्याल कर.

दूसरों को भी भूल मत.

तेरे पास वक़्त ही वक़्त है.

खुद के अंदर खुद को ढूंढ.

कुछ गलत 'गर कम्बख्त है.

तो मत बैठ आँखें मूँद.

अभी तो जानता ही है.

कितनों को इसने लपेटा है.

पर हर कोई मानता ही है.

मरने वाला है जो मौत देता है.

तो मान लो जो विद्वान कहते हैं.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

जब जीत चुके होंगे जंग ये.

तब बीत चुके होंगे ये दिन.

तू बस सबका संग दे.

गुज़ारदे बस कुछ पलछिन.

दोबारा सड़कों पे भीड़ होगी.

मैदानों में बच्चे खेलेंगे.

वही खुशनुमा तस्वीर होगी.

फिर हम आवारागर्दी पेलेंगे.

पर अभी तो इन्तिज़ार कर.

ये नहीं वो मिलन की बेला है.

इंसान से थोड़ा प्यार कर.

अगर तू इंसान का बेटा है.

उबासी ही सहनी है चलो सहते हैं.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

अंत में इंसान अपनी राह खोज ही लेता है.

34. Sab Theek

Hai

घबराओ मत,

सब ठीक है,

गुस्साओ मत,

सब ठीक है,

सब मर जायेंगे,

चलो ठीक है,

डराओ मत,

सब ठीक है,

ध्यान भटका है,

तो भटकने दो,

सांस अटकी है,

तो अटकने दो,

दरारें आ रही हों,

अगर हौसलों में,

मान लो लाज़मी है,

कवच ही है चटकने दो,

जान जानी ही है,

तो जाने दो,

अंत आना ही है,

तो आने दो,

और अगर मन,

भारी हो रहा हो,

तो उसे अपने,

असमंजस में खो जाने दो,

ना ब्रह्माण्ड तुम्हारा है,

ना धरती पर कोई क़र्ज़ है,

यहाँ कितने आये कितने गए,

तुम्हे जाने में क्या हर्ज़ है,

दिल को डरने के क्यों बहाने दो,

उसे तो बस गुनगुनाने दो,

वो आलस भरे फ़साने दो,

जो अगर याद ना हो तो अर्ज़ है,

सब ठीक है,

सब ठीक है,

भाड़ में जाए,

सब ठीक है,

घबराओ मत,

सब ठीक है,

गुस्साओ मत,

सब ठीक है,

सब मर जायेंगे,

चलो ठीक है,

डराओ मत,

सब ठीक है।

35. Raajan

समस्या तो बड़ी थी.

समाधान भी कठिन था.

पर राजन कुछ भी.

लागू नहीं कर पाते हैं.

मौत चौखट पार खड़ी थी.

बचना लगभग नामुमकिन था.

पर राजन सब छोड़.

बेईमानी से सरकारें बनाते हैं.

मज़दूरों की किस्मत बहुत बुरी थी.

गरीब रोटी को मोहताज हर दिन था.

पर अहंकार में चूर आँखों को.

दुख दर्द नज़र कहाँ आते हैं.

जो बस दबा कुचला है सदा से.

उसके कष्ट से नज़रें फिराना है कब तक.

आपदा को रोकने से आयी आपदा से.

उसको, उसके परिवार को तड़पना है कब तक.

वो महीनों से पैदल चला जा रहा है.

कोरोना और भूक से बच पायेगा कब तक.

राजन और भक्तों की नींद नहीं टूटेगी.

घुट कर नहीं वो मर जाएगा जब तक.

बहुत नाज़ुक घड़ी थी.

लड़ना हथियार बिन था.

पर राजन युद्ध बता कर.

आपस में ही लड़वाते हैं.

खामियां भारी पड़ीं थी.

कौन डरा नहीं था.

राजन फूल बरसाते हैं.

ताली बजवाते हैं.

दिये जलवाते हैं.

लाठी चलवाते हैं.

भ्रम फैलाते हैं.

गुलाम बनाना चाहते हैं.

और हालाँकि.

समस्या तो बड़ी थी.

समाधान भी कठिन था.

और माना कि राजन कुछ भी.

लागू नहीं कर पाते हैं.

पर आप भी किसान के.

पसीने का क़र्ज़ नहीं चुकाते हैं.

मज़दूर की मजबूरी को.

भूल लोभ का गाना गाते हैं.

36. Corona Badha

Jaata Hai

लोग शासन से कुछ मांगते हैँ.

शासन प्रशासन को कुछ बताता है.

प्रशासन वाले बस चोरी करना जानते हैँ.

तब तक कोरोना बढ़ा जाता है.

राज्य केंद्र से कुछ और चाहते हैँ.

केंद्र बस खाली हाथ दिखाता है.

हादसों के रोज़ समाचार आते हैँ.

इधर उधर गरीब मारा जाता है.

लापरवाही उदासीनता की बू आती है.

नफरत का तूफ़ान जाता आता है.

बेसहारे की बेबसी देख उबासी क्यों आती है.

डर दर्द भुला कच्ची नींद सुलाता है.

बढे हुए रोज़ आंकड़े आते हैं.

कोई भी आकस्मत मर जाता है.

गवाह भयानक वाकये बताते हैं.

हर कोई बस बुरी खबर लाता है.

पर जब नेकियों के किस्से सुनते हैं.

हालातों से लड़ने का हौसला आता है.

इंसानियत के धागे से जो जहान बुनते हैं.

बस उन्हें ही जीने का कायदा आता है.

ऐसे में राजन बगलें झांकते हैं.

उनका तंत्र उधर अफवाहें फैलाता है.

बेशर्मी की सब सीमाएं लाँगते हैं.

तब तक कोरोना बढ़ा जाता है.

37. Jai

Mazdoor

जय मज़दूर

मज़दूर के दमन का जश्न मनाओ.

उसके अधिकारों से राजन को नफरत है.

अपनी सोचो उसे भूल जाओ.

उसके जीवन की क्या कीमत है.

उसे भूके सडकों पे घिसने दो.

देश निर्माता उस ही लायक़ है.

उसे मशीनो में पीसने दो.

उसको तड़पाना जायज़ है.

मनोरंजन तो दूर की बात है.

संचार से भी ना कहीं जुड़ जाये.

उसके स्वास्थ की चिंता व्यर्थ है.

ग़ुलाम पिंजड़े से ना उड़ जाये.

मज़दूर को ना आराम चाहिए.

ना उसे इज़्ज़त की ज़रुरत है.

चुप चाप उसे करना काम चाहिए.

उसके जीवन की क्या कीमत है.

उसका प्रान्त उसको है बोझ समझता.

धोबी का कुत्ता ना घर ना घाट का रहा.

उसका आशियाँ है रोज़ उजड़ता.

जानवर बन गया इंसान बस जात का रहा.

उसे अंधविश्वासों में झोंक दिया है.

उसे बंधुआ बन कर मरने दो.

सेठों ने राजाओं को गोद लिया है.

जिसका जो मन हो करने दो.

मेहनत से मुल्क बनाने वाले.

मज़दूरों को उपकार की आदत है.

जो बस देता है लेता कुछ नहीं है.

उसके जीवन की क्या कीमत है.

मनुष्य के मौलिक अधिकार छीनना.

कहाँ की इंसानियत है.

अपने लोगों का शोषण करना.

संविधान की फ़जीहत है.

गलतफहमी में मत रहना की सच.

से जीत गयी जाहिलियत है.

जो गलत हुआ वो सुधरेगा ज़रूर.

क्यूंकि उसके जीवन की बहुत कीमत है.

जय किसान

38. Badlaav Ki Hai

Bela

बदलाव की है बेला.

चल निकल तू अकेला.

थमी हुई साँसों से सजी.

भय की महफ़िल से.

भटकी हुई आसों को.

मिला कभी मंज़िल से.

बदलते स्वभाव की सुबह हो.

हावी आदतों पे वजह हो.

कुछ आगाज़ इस तरह हो.

जैसे हो मक़सदों का मेला.

जब स्वर्ग बन चुका सज़ा हो.

तो है बदलाव की ये बेला.

चल निकल तू अकेला.

अकेला सारे पूर्वाग्रहों से दूर.

ढूंढ आलस के अलावा कोई फितूर.

श्रम का समय है ख़त्म हुआ खेला.

वक़्त वजूद मांगता है.

इरादा मज़बूत मांगता है.

शौर्य का सबूत मांगता है.

है दम तो जा दे ला.

ये बदलाव की है बेला.

साधारण बन समय सा.

बने मिसाल तेरी स्थिरता.

थाम दामन सही लय का.

है काल का पहिया फिरता.

फिर क्यों है जाल में गिरता.

कोशिश कर ना गिरने की.

चाहे जितना भी जाए धकेला.

मुस्कान से मन बेहला.

किसी काम का कहला.

चल निकल तू अकेला.

बदलाव की है बेला.

भरते घाव की है बेला.

बदलाव की है बेला.

बदलाव की है बेला.

39. Taalabandi

Kahan ghoomne jayenge,

Kaise machayenge,

Kya kar dikhayenge,

Itihaas dohrayenge,

Jab sab bahar aayenge,

Kya piyenge khayenge,

Rangraliyan rachayenge,

Khud ko sajayenge,

Sabko bulayenge,

Jab hum wapis aayenge,

Aazadi se naachange,

Saath nachayenge,

Gappe ladayenge,

Sapne sajayenge,

Jab sab bahar aayenge,

Jab hum wapis aayenge,

Kuch palon ki dooriyon pe,

Rozmarrah ki zindagi hai,

Thoda sa tu sabra kar,

Sab theek ho jaayega,

Hausalon ki seedhiyon pe,

Chadh ke karni wapasi hai,

Maut se kahe ka dar,

Jo hoga dekha jayega,

Nazmein banayenge,

Saath mein gayenge,

Sab gungunayenge,

Kadam badhayenge,

Jab sab bahar aayenge,

Chadarein chadhayenge,

Ghantiyaan bajayenge,

Katarein lagayenge,

Sitare tod layenge,

Jab hum wapis aayenge,

Kadam thirkayenge,

Na tab sharmayenge,

Nahi ghabrayenge,

Na lab thartharayenge,

Jab sab bahar aayenge,

Jab hum wapis aayenge,

Jaan bharne khwahishon mein,

Aane wali iccha shakti hai,

Tarkon ka na toote asar,

Tu pakka kar dikhayega,

Hausalon ki seedhiyon pe,

Chadh ke karni wapasi hai,

Chahe jaisi bhi hogi dagar,

Jo hoga dekha jayega,

Dilon ko lubhayenge,

Saansein rukayenge,

Karz chukayenge,

Farz nibhayenge,

Jab sab bahar aayenge,

Saath karhayenge,

Dard bhulayenge,

Zakhm sahlayenge,

Ashk bahayenge,

Jab hum wapis aayenge,

Sar na jhukayenge,

Beeda uthayenge,

Khushiyan lutayenge,

Nafrat rukayenge,

Jab sab bahar aayenge,

Jab hum wapis aayenge,

Doosron ki galtiyon se,

Mili seekh man mein basi hai,

Hogi raah mushkil magar,

Tujhe kaun harayega,

Hausalon ki seedhiyon pe,

Chadh ke karni wapasi hai,

Josh rakh jaane jigar,

Jo hoga dekha jayega.

40. Apravaasi

सब ठीक ठाक ही था.

एंटोप हिल पे ली नयी खोली थी.

शिवाजी पार्क पे नया धंधा था.

भुट्टे की स्टाल खोली थी.

पिताजी कल आने वाले थे.

आज सुबह की गाडी थी.

संग गाँव से अनाज ला रहे थे.

माँ भी काम पे जा रही थी.

हम तीनो मिला के भी बस.

गुज़ारे भर का ही कमा पाते थे.

माँ कटका करने जाती थी.

पिताजी मजदूरी करने जाते थे.

जनता कर्फ्यू के ऐलान का दिन था.

थाली बजी अपनी भी गली में.

हम दोनों खाना खा सो गए.

सुबह स्टेशन जाने की जल्दी में.

घर पहुँच बातों बातों में.

कोरोना की भी बात हुई.

सबको लगा जल्दी ख़तम होगा.

कुछ ही दिन का आराम सही.

पर तीनो के काम बंद हो गए.

और दिन हफ़्ते में बदल गए.

लाया राशन भी ख़तम होने लगा.

कई पडोसी पैदल निकल गए.

सब डरे हुए और भूखे थे.

और महीना पार हो गया.

पहले माँ की तबियत ख़राब हुई.

फिर पिताजी को बुखार हो गया.

फिर किसी तरह तीनों ने टेस्ट कराया.

पर किसी को भी कोविड नहीं था.

सब जमा पैसा उसमे गवाया.

अब रुकने का कोई औचित्य नहीं था.

तो सब बाँध निकले हम तीनो पैदल.

कि रास्ते में शायद कोई मदद कर दे.

सबके पीछे पीछे बस जा रहे थे चल.

रात तक बम्बई पार कर गए थे.

असंगाओं की एक दुकान के बाहर सोये.

सुबह कोई सबको खाना दे रहा था.

वो खाने से पहले नल पे हाथ मुँह धोये.

फिर नाशिक की तरफ जाना था.

फिर दिन भर भूखे प्यासे चलना.

शाम को माँ ने चावल बनाया.

सडक किनारे लकड़ी जला के.

थोड़ा खाया थोड़ा कल लिए बचाया.

सुबह पिताजी को चक्कर आ गए.

किस्मत से एक ट्रक वाला पास रुका.

वो देख तरस खा के हमपे.

धुले तक ले जाने को मान गया.

रास्ते भर लोगों को बिठाकर.

पूरा खाली ट्रक भर गया.

मालेगाव में पुलिस सबको उतारकर.

इतना मारा कि एक आदमी मर गया.

हम भागे तो माँ के पाँव में मोच आ गयी.

बेचारी तब भी चुप चाप चलती रही.

दो दिन किसी तरह रुक चलके.

एमपी बॉर्डर पर पहुंचे हम सभी.

चुपके से खेतों के रास्ते से सबने.

दो दिन रुक बॉर्डर पार किया.

पर अभी झाँसी दूर बहुत था.

तभी सरकार ने ट्रेन चला दिया.

ये सोच के रात में खा के सो गए.

कि कल ट्रेन का पता लगाएंगे.

तभी बगल से तेज़ ट्रक दो गए.

लगा कि ऊपर ही चढ़ाएंगे.

तो उनको गाली देता मैं दौड़ा.

तब तक एक तीसरा ट्रक आया.

मैंने तभी अपनी माँ को सुना.

दोनों को उसने पहियों से दबाया.

मैं बच गया मुझे पता नहीं क्यों.

समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ.

दोनों का शरीर सुनसान सडक पे बिखरा था.

मुझे लगा कि ये कोई बुरा सपना था.

जब तक ये सोचा तभी नींद खुल गयी.

नींद में ही ऐसी का रिमोट ढूंढा.

आजकल गर्मी बहुत बढ़ गयी.

सोचा ये जीवन मुझे मिला क्यों था.

Anonymyk